Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2021 GISRRJ | Volume 4 | Issue 5 | ISSN : 2582-0095

जाति, जातिवाद व जातीय राजनीति

मदन कुमार वर्मा,
एसो0 प्रोफेसर, उपाधि महाविद्यालय,
पीलीभीत,उत्त प्रदेश।

सारांश – भारतीय राजनीति में जातिवाद का भारतीय समाज एवं राजनीति पर प्रभाव व परिणाम
मुख्य शब्द – जाति, जातीय राजनीति, जातिवाद, आरक्षण, वर्गवाद।

Article Info
Volume 4 Issue 5
Page Number: 16-18

Publication Issue :
September-October-2021

Article History
Accepted : 01 Sep 2021
Published : 05 Sep 2021

आर्यों ने भारत में आकर अपनी सुविधा हेतु अपने को चार वर्णों में विभाजित कर लिया ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एंव शुद्र, जिसमें ब्राह्मण धार्मिक कार्य करता, क्षत्रिय प्रशासनिक कार्य करता, वैश्य व्यापार–वाणिज्य का कार्य करता तो शूद्र तीनों वर्णों की सेवा करता था। समय बीतने के साथ वर्ण–व्यवस्था को स्थायी बनाने हेतु इसे मिथकीय रूप दिया गया कि ब्रह्मा के मुख से ब्राह्मण, भुजा से क्षत्रिय, पेट से वैश्य तो पैरो से शूद्र की उत्पत्ति हुई। इस विवरण से स्पष्ट है कि विभिन्न वर्णों द्वारा एक विशेष कार्य करने से भारत में वास्तव में वैदिक काल में ही एक प्रकार के जातिवाद की नींव पड़ गई जिसमें स्त्रियां समाहित न थी। कालक्रमेण वर्ण–व्यवस्था दो कारणों से अपने मूल स्वरूप को बनाये रखने में असर्मथ हो गयी।

1. वैश्यों व शूद्रों ने वर्ण–व्यवस्था के विरूद्ध विद्रोह शुरू कर दिया
2. भारत पर होने वाले विदेशी आक्रमण ने भी वर्ण–व्यवस्था को प्रभावित करना शुरू किया।

उक्त दो कारणों सहित अन्य कारकों ने भी वर्ण–व्यवस्था को प्रभावित करना शुरू किया जिसके फलस्वरूप वर्ण–व्यवस्था जाति–व्यवस्था में बदलने लगी। शक, हूण, यवन, पारसीक इत्यादि विदेशी आक्रमणों ने भारतीय वर्ण–व्यवस्था की जड़ो का हिला दिया जिससे अनेक जातियों एंव उप–जातिया अस्तित्व में आयी। इस समय लोगों में ब्राह्म्ण व क्षत्रिय बनने की होड मच गयी। बेमेल विवाह, विधवा विवाह, बहू विवाह इत्यादि ने भी जाति व्यवस्था को बढ़ाने में मद्द की इस जातीय व्यवस्था में प्रत्येक जाति अपने ही जाति में विवाह खान–पान इत्यादि सम्बन्ध रखता था इससे सिद्ध होता है जाति व्यवस्था एक बंद समाज है जिससे बाहर किसी व्यक्ति का जाना उसे सामाजिक जंजालो मे ड़ाल देता। अपृश्यता, छूआ–छूत ऊँच–नीच यह जाति–व्यवस्था की विशेषता है इस जातीय व्यवस्था के फूट ने हमेशा विदेशियों को भारत पर विजय प्राप्त हेतु आकर्षित किया जो सफल भी रहे। यही नही जाति–व्यवस्था को भारत में समाप्त करने हेतु भगवान बुद्ध व जैन मुनि ने आन्दोलन भी चलाये पर इन्हे विशेष सफलता न मिली। परिणाम यह हुआ जब कन्नौज के राजा हर्षवर्धन की मृत्यु हो गयी तो उत्तर भारत की राजनैतिक एकता भंग हो गयी अब छोटे–छोटे रजवाड़े पनपने लगे जो आपस में लड़की व अच्छी स्त्री प्राप्त हेतु लड़ते थे। परिणामतः भारत में मुस्लिम आक्रमण को प्रोत्साहन मिला और धीरे–धीरे मुस्लिम सत्ता ने सम्पूर्ण भारत में आधिपत्य जमा लिया, ब्राह्मण व क्षत्रियों में से अनेको ने इस्लाम धर्म ग्रहण कर मनचाहा पद प्राप्त किया इस समय धार्मिक परिवर्तन की लहर चली जो मुगल काल में आकर अपने चरमोत्कर्ष पर औरंगजेब के समय पहुँच गयी। पर शनै–शनै मुगल साम्राज्य की सत्ता क्षीण होने के पश्चात अंग्रेजों ने भारत में अपनी सत्ता स्थापित कर ली जिसमें रार्बट क्लाइव का योगदान विशेष सराहनीय है

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

आगे चलकर अंग्रेजो ने भी भारत की जातीय व्यवस्था का लाभ उठाया और जाति के आधार पर जाट रेजीमेंट, गोरखा रेजीमेंट इत्यादि सैन्य संगठनों का गठन किया और आजादी पश्चात् 26 जनवरी 1950 को जब भारत ने अपना संविधान लागू किया तो प्रत्येक स्त्री–पुरूष को बिना किसी भेद–भाव के सार्वभौमिक मताधिकार दिया और पाश्चात्य लोकत्रांतिक संविधान के लागू होने पर भारतीय नीति–निर्माताओं ने यह सोचा कि जैसे–जैसे पाश्चात्य मूल्यों का प्रवेश आम जनता में होने लगेगा वैसे धीरे–धीरे भारतीय जनमानस जतिवाद, छुआ–छुत अश्पृश्यता, ऊँच–नीच की भावना से दूर होता चला जायेगा लेकिन व्यवहार में इसके विपरीत राजनीतिक व्यवस्था पनपने लगी। ब्राह्म्ण, क्षत्रिय व वैश्य प्रारम्भ मे इन तीनों जातियों ने जातिवाद शुरू किया और जिसका परिणाम यह हुआ कि राजनीति व प्रशासन के सभी महत्वपूर्ण स्थानों पर इनका वर्चस्व हो गया। दलित वर्ग अपने मिले आरक्षण लाभ के अन्तर्गत विभिन्न राजनीतिक पदों एंव प्रशासनिक पदों पर छा गया। मध्यम जातीय जिसे सामान्य रूप से पिछड़ा वर्ग के नाम से जाना जाता है ये राजनीतिक एंव विशेषकर प्रशासनिक पदों पर काफी पिछड़ गयी तो सरकार ने इन्हें भी 27% आरक्षण दिया जिससे पूरा देश जातिवाद की आग मे जल गया। बाह्मण, क्षत्रिय, वैश्य ने 27% पिछड़ा वर्ग आरक्षण के विरूद्ध पूरे देश में आन्दोलन चलाया तो प्रत्युत्तर में पिछड़ी वर्ग ने भी आरक्षण के समर्थन मे अन्दोलन चालाया। इस दौरान जातिवाद की मुख्य विशेषता यह रही कि अब उसने वर्गवाद का रूप लेना शुरू कि बाह्मण, क्षत्रिय व वैश्य ने वर्गवाद को बढ़ाबा देना शुरू किया जबकि अनूसूचित जन जाति और पिछडा वर्ग अभी जातिवाद के जंजाल मे ही उलझे है उनमें वर्ग–वाद की भावना का अभाव है।

भारतीय राजनीति में जातिवाद की राजनीति सर्वप्रथम बिहार से शुरू हुई बिहार में आज सत्ता का प्रमुख खेल अब यादव, कुर्मी बनाम अन्य के मध्य धूम रही है यादव– यादव के लिए कुर्मी कुर्मी के लिए मत देता है अब यहाँ सवर्णों का जातीय राजनीति में भागीदारी घटी है यहाँ अब सत्ता ब्राह्मणों, कायस्थों व राजपूतों के हाथ से निकल गयी है। राजस्थान में राजनीति का संघर्ष मुख्य रूप से जाटों व राजपूतों के मध्य है जबकि हरियाणा की राजनीति जाट बनाम अन्य जाति के आधार पर संचालित होती है जाट–जाट के लिए नारा यहाँ खूब लोकप्रिय है गुजरात में पाटीदार व अनाविल जातियों के मध्य संधर्ष है तो आन्ध्र प्रदेश में कम्मा–रेड़्डी जातियो के मध्य संर्धष पाया जाता है कर्नाटक की राजनीति प्रमुखता लिगायतों और बोक्कालिंगो के मध्य है तमिलनाडु में ब्राह्मण व अन्य जातियों के मध्य संर्धष रहा है महाराष्ट्र में मराठा व ब्राह्म्णों के मध्य संधर्ष रहा है मराठों जाति विजय 1966 में तब पराकाष्ठा पर पहुँव गया जबकि अलग महाराष्ट्र राज्य का निर्माण हो गया।

इस प्रकार विभिन्न राज्यों की राजनीति केवल जातिवाद के आधार पर संचालित नही हो रही है अपितु विभिन्न जातीयों ने अपने जातीय राजनीति में सफलता हेतु जातीय आधार पर विभिन्न राजनीतिक दल बनाये गये है जैसे स्वतन्तत्रा पूर्व 'मद्रास की जास्टिस पार्टी 'और मुम्बई की इंडिपेन्डेन्ट पार्टी का निर्माण जातीय आधार पर हुआ था महाराष्ट्र में कृषक एवं मजदूर दल मराठो का तो रिपब्लिकन दल महाराष्ट्र के दलित वर्ग प्रतिनिधि संगठन है राजस्थान में राजपूत सभा, जाट सभा सभी जातीय श्रेणी के संगठन है।

सैद्धातिक रूप से सभी नेता जाति, जातिवाद एवं जातीय राजनीति को हेय दृष्टि से देखते है पर व्यवहारिक रूप में स्थिति निम्न है–

(1) राजनीतिक दल टिकटों का बँटवारा जातीय आधार पर करते है।

(2) सभी जातीय अपने–अपने महापुरूषों का जातीय आधार पर सम्मेलन व उनका गुण–गान कर अपने आप को गौरवान्वित महसूस करती है।

(3) राज्य व केन्द्र स्तर पर मत्रिमंडल निर्माण में जातीय संतुलन का ध्यान रखा जाता है।

(4) विभिन्न जातीय अपने माँगो की पूर्ति हेतु धरना व प्रर्दशन करती है जैसे जाट, गुर्जर, पटेल एवं मराठों के आन्दोलन ने सरकार को विवश कर दिया कि सवर्ण वर्गों को विभिन्न पदों हेतु 10% आरक्षण दे।

वास्तव में भारतीय राजनीति में जातिवाद का सकारात्मक व नकारात्मक दोनों प्रभाव पड़ा है। सकारात्मक दृष्टि से जातिवाद के माध्यम से विभिन्न जातियों की राजनीतिक प्रक्रिया व सत्ता में भागेदारी बढ़ी है तो नकारात्मक दृष्टि से जातिवाद ने कभी–कभी हिसंक रूप धारण किया विशेषकर सर्वण व दलित सघर्ष में। जिसमें दलितों को कुचला गया कही–कही पर विभिन्न जातियों की सेना भी बनायी गयी जैसे– भीम सेना (उ.प्र.) व बिहार में विभिन्न जातियों की सेना। जिससे हिन्दूत्व एकता के विचार को धक्का लगा।

वास्तव में भारतीय वर्ण–व्यवस्था ने धीरे–धीरे भारत को हजारों जातियों व उपजातियों में बाँट दिया जिससे भारत की राष्ट्रीय एकता बाधित हुई जिसका लाभ विदेशी आक्रमण कारियों ने उठाया। यदि प्राचीन काल में शक, यवन, हूण भारत में आये और यहाँ रच–बस गये तो मुस्लिम (मध्य युग) अंग्रेज (आधुनिक युग) आये। अंग्रेजो के आने के बाद भारत में जैसे–जैसे पाश्चात्य मूल्यों का प्रसार हुआ तो देश में जन–जागरूकता के साथ–साथ एक नये शिक्षित वर्ग का उदय हुआ। आजादी के बाद इस नये शिक्षित वर्ग ने सत्ता अपने हाथ में लेते ही जातिवाद, अपृश्यता, छूआछूत इत्यादि के विरूद्ध बिगुल फूका। पर विशेष सफलता न मिली। परिणामतः राजनेताओं की जो नयी पीढ़ी सामने आयी उसके जाति में एक वैशाखी के रूप में प्रयोग किया जिससे जाति के टूटने व खत्म हेाने की सम्भावना धूमिल पड़ गयी। लेकिन जातियों में विद्यमान अश्पृश्यता, छूआ–छूत, ऊँच–नीच भेद–भाव में कमी आयी है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

(1) भारतीय सरकार एंव राजनीति– डा0 त्रिवेदी आर.एन. एवं राय एम.पी.
(2) भारतीय शासन एवं राजनीति– फाडिया बी0 एल0
(3) भारतीय राजनीतिक व्यवस्था– सईद एस. एम.
(4) भारतीय राजनीतिक व्यवस्था– जैन पुखराज
(5) भारतीय शासन एंव राजनीति– चर्तुवेदी, डा0 दिनेश चंद,
(6) भारत में राजनीति – रजनी कोठारी

समाचार पत्र :–
– दैनिक जागरण
– अमर उजाला